सामयिक सलाह

क्या करें ? कैसे करें ? कब करें ?

जुलाई 2016

1. नए फल वृक्षों को लगाने का कार्य करें।
2. केले के पौधो की रोपाई का कार्य प्रारंभ करें।
3. सब्जियों के तैयार पौधों का रोपण करें।
4. रोपा धान में नींदानााक अंकुरण एवं पाइरेजोसफ्यूरॉन या ऑक्जिडायर्जिल या एनीलो फास या ब्यूटाक्लोर या पेन्डीमेथेलिन का छिड़काव करें।
5. पशुपालक, नालियों की सफाई पर विशेष ध्यान दें।
6. नर्सरी तैयार होने के उपरान्त टमाटर, मिर्च , बैंगन एवं फूलगोभी की रोपाई करें।
7. अदरक, हल्दी , भिण्डी एवं बरबटी की निराई गुड़ाई एवं पानी न गिरने पर सिंचाई की समुचित व्यवस्था करें।
8. धान नर्सरी अवस्था में तनाछेदक कीट दिखाई देने पर नर्सरी का उपचार दानेदार कीटनाशकों से करें ।

अगस्त 2016

1. मूंग की फसल को लेट ब्लाइट रोग से बचाने के लिए हेक्सा कोनाजोल फफूँदनाी का छिड़काव करें।
2. अमरूद, नींबू एवं अन्य वृक्षों में गूटी बॉधे तथा पिछले माह बॉधी गई गूटी को मातृ पौधो से अलग कर प्लास्टिक थैली में रोपण करें।
3. धान के खेत में लगातार पानी भरकर न रखें।
4. रोपा लगाने के पूर्व धान के थरहा की जड़ो को क्लोरपायरीफास 20 ई सी दवा 1 मिली /ली पानी तथा 2 किलो यूरिया मिलाकर 3-4 घंटे डुबाकर रोपा लगाएँ या नर्सरी खेत में कार्बोफ्यूरॉन 33 किलो/हे. की दर से थरहा निकालने के 4 दिन पहले देवें।
5. खेत में हरी काई का प्रकोप दिखे तो पानी को निकाले। खेत में जिस जगह से पानी अन्दर जाता है , वहाँ कॉपर सल्फेट को पोटली में बाँध कर रखें।
6. खरीफ प्याज को खेत में रोपाई करें।

सितम्बर 2016

1. अदरक एवं हल्दी में मिट्टी चढ़ाएँ।
2. बेलदार एवं लता वाली सब्जियों में तुरंत सहारा देने का कार्य करें एवं मिट्टी चढ़ाएँ।
3. तना छेदक के लिए फेरामोन ट्रेप उपयोग करें या लाइट ट्रेप द्वारा भी व्यस्को की संख्या को कम किया जा सकता है।
4. भूरा माहो के नियमित प्रकोप वाले स्थानो पर फोरेट का इस्तेमाल न करें। कीट प्रकोप की तीव्रता होने पर इमिडाक्लोप्रिड 125 मि ली . दवा का उपयोग करें।
5. धान की फसल में झुलसा रोग के लक्षण नाव आकार के धब्बे के रूप में दिखते ही ट्राइसाइक्लोजोल (0.6 ग्रा / ली . पानी)/आइसोप्रोथियोलेन (1 मि ली /ली . पानी) टेबुकोनाजोल (1.5मि ली . /ली .पानी) में से किसी एक फफूँदनाक दवा का छिड़काव करना चाहिए। छिड़काव दोपहर तीन बजे के बाद करें तो रोग का प्रभावी नियंत्रण होगा।

केन्द्र में कार्यरत वैज्ञानिक

डॉ.एस.के.वर्मा	कार्यक्रम समन्वयक	मो. : 9424214626
डॉ.रेखा सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)	मो. : 9425517103
डॉ.सौगात सासमल	विषय वस्तु विशेषज्ञ (मत्स्य विज्ञान)	मो. : 9406027360
श्री साकेत दुबे	विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यानिकी)	मो. : 8817551202
श्री कुणाल चंद्राकर	विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान)	मो. : 9754377591
डॉ.मनीष कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान)	मो. : 9754377591
इंजी.रवीश केशरी	विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा एवं जल अभियांत्रिकी)	मो. : 9425373479
श्री एस.एम.अली हुमायूँ	कार्यक्रम सहायक (कीट विज्ञान)	मो. : 9827909069

प्रेषक :
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुंद (छ.ग.)
पिन : 493 445
Email : kvkmahasamund@gmail.com

भारत शासन सेवार्थ

बुक पोस्ट

प्रति/श्रीमति/डॉ. ....

....

....

उन्नत कृषि

इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुंद (छ.ग.)

समृद्ध किसान

वर्ष - 8, अंक - 17 त्रैमासिक पत्रिका जुलाई-सितम्बर 2016

संपादक मण्डल

संरक्षक
डॉ. एस. के. पाटिल
कुलपति
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक
डॉ. एम.पी.ठाकुर
निदेशक विस्तार सेवायें
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणा स्रोत
डॉ. अनुपम मिश्रा
निदेशक कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, भा.कृ.अनु.प. जबलपुर (म.प्र.)

प्रकाशक एवं प्रधान संपादक
डॉ. एस.के. वर्मा
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुंद

संपादक
डॉ. रेखा सिंह
(विषय वस्तु विशेषज्ञ - गृह विज्ञान)

सह-संपादक
डॉ. सौगात सासमल
(विषय वस्तु विशेषज्ञ-मत्स्य विज्ञान)

श्री साकेत दुबे
(विषय वस्तु विशेषज्ञ - उद्यानिकी)

श्री कुणाल चंद्राकर
(विषय वस्तु विशेषज्ञ-मृदा विज्ञान)

श्री मनीष कुमार सिंह
(विषय वस्तु विशेषज्ञ-सस्य विज्ञान)

श्री रविश केशरी
(विषय वस्तु विशेषज्ञ-मृदा एवं जल अभियांत्रिकी)

श्री एस.एम.अली हुमायूँ
(कार्यक्रम सहायक - कीट विज्ञान)

हर कदम, हर डगर किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

उड़द एवं मूंग में प्रथम पंक्ति प्रदर्शन एवं मॉनिटरिंग टीम का भ्रमण

दलहनी फसलों की खेती में जिले के कृषकों का रूझान बढ़ाने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुन्द द्वारा मूँग एवं उड़द फसल उत्पादन हेतु समूह मे खेती को प्रोत्साहित किया गया। केन्द्र द्वारा जिले में महासमुन्द तहसील के नायकबाँधा एवं बागबाहरा तहसील के छुईहा गाँव में 100 एकड़ क्षेत्र में उड़द की खेती और महासमुन्द तहसील के जोगीडीपा, छिन्दौली, पंड्रीखार, बरेकेल, मुनगासेर, लामी, पटेवा, चिरको तुरीडीह, बोडरा एवं पिथौरा तहसील के ढाबाखार एवं जमूदा ग्राम में 100 एकड़ में मूँग समूह फसल प्रदर्शन लिया गया । कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुन्द द्वारा खरीफ 2016 के अंतर्गत दलहन फसल समूह प्रदर्न में उड़द एवं मूंग फसलों का प्रदर्शन महासमुन्द जिले में लिया गया है। दिनाँक 06/08/2016 को प्रदर्शन का निरीक्षण करने हेतु निदेशक विस्तार सेवाएँ, इं.गा.कृ.वि.वि. के द्वारा गठित समिति का आगमन हुआ जिसकी अध्यक्षता इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर से पधारे डॉ. के.एल. नन्देहा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं सदस्य डॉ. निरंजन खरे, डॉ. एल. के. श्रीवास्तव एवं डॉ. नवनीत राणा के द्वारा की गई। निरीक्षण समिति के द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा लगाये गये उड़द एवं मूंग फसलों के प्रदर्शन का अवलोकन किया गया ।

कुलसचिव इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय का कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुन्द में भ्रमण

दिनॉक 08/08/2016 को कृषि विज्ञान केंद्र, भलेसर, महासमुन्द में श्री एस.आर. वर्मा, कुलसचिव इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) एवं संचालक समिति रायपुर द्वारा भ्रमण किया गया । कार्यालय में उपस्थित कार्यक्रम समन्वयक से जिला महासमुन्द में खरीफ में लिए गये कार्यक्रमों की जानकारी ली गई तथा समूह प्रदर्शन (मूंग एवं उड़द) की वर्तमान स्थिति के बारे में चर्चा की गई व केन्द्र में पदस्थ विभिन्न विषयों के विषय वस्तु विशेषज्ञों से सबंधित विषयों पर कृषकों के लिए कार्यक्रम के बारे में दिशा निर्देश दिये । प्रक्षेत्र भ्रमण उपरांत अधिकारियों द्वारा फल पौध का रोपण किया गया। पौध रोपण कार्यक्रम में ग्राम पंचायत भलेसर के प्रतिनिधी तथा कृषक उपस्थित थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र में स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, भलेसर, महासमुन्द में 15 अगस्त 2016 को स्वतंत्रता दिवस का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम भारत माता की पुजा की गयी तत्पचात कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. एस.के. वर्मा के द्वारा ध्वाजारोहण किया गया। इस शुभ अवसर पर भलेसर ग्राम में स्थित शासकीय प्राथमिक शाला के प्रधान अध्यापक, शिक्षकगण एवं समस्त छात्र-छात्राएँ, भलेसर ग्राम पंचायत के पंचगण, ग्राम के गणमान्य नागरिक, कृषक एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारी एवं कर्मचारी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के अगले चरण में डॉ. एस. के. वर्मा ने अपने उद्बोधन में स्वतंत्रता दिवस के महत्व के बारे में बताया एवं उपस्थित छात्र-छात्राओं तथा नागरिकों से देश के विकास में सहयोग करने का आह्वान किया। इस अवसर में केन्द्र में उपस्थित सभी लोगों ने आपस में स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी एवं प्रक्षेत्र में वृक्षारोपण किया गया तथा सभी को मिष्ठान का वितरण किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र महासमुन्द में पांच दिवसीय मत्स्य प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुन्द के द्वारा आयोजित तथा राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद के सौजन्य से पाँच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम -मिश्रित मछली पालन विषय पर 26 से 30 सितम्बर 2016 तक सफल आयोजन किया गया जिसमें महासमुन्द जिले के चयनित 25 मत्स्य कृषक प्रशिक्षण में शामिल हुए। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री धरमदास महिलांग, अध्यक्ष जनपद पंचायत महासमुन्द एवं समापन समारोह में श्री हरगोविन्द मेहरा, सहायक संचालक, महासमुन्द, मछली पालन विभाग (छ.ग. शासन) उपस्थित थे। पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञों द्वारा मछली पालक कृषकों को मिश्रित मछलीपालन के लिये तालाब प्रबंधन, मत्स्य बीज उत्पादन की उन्नत तकनीक, नर्सरी तालाब प्रबंधन, प्रमुख मछली प्रजातियों का चयन, प्राकृतिक एवं पूरक आहार, विभिन्न बीमारियो की रोकथाम, आर्थिक लाभ एवं शासन द्वारा विभिन्न योजनाओं की जानकारी विस्तृत रुप से दी गयी ।

कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुंद में एक्सटेंशन रिफार्म्स (आत्मा) योजनांतर्गत कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा का आयोजन दिनांक 01.08.16 को किया गया । जिसमें जिले के कृषकों के साथ-साथ कृषि, उद्यानिकी एवं संबंधित विभाग के अधिकारी सम्मिलित हुए, उपस्थित विभाग के अधिकारियों द्वारा वर्तमान फसल स्थिति एवं आगामी कृषि कार्य योजना के संबंध में चर्चा की गई ।

कृषकों के खेतों में वैज्ञानिक परीक्षण (ऑनफार्म टेस्टिंग)

क्र.	फसल	शीर्षक	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	कृषक संख्या	रकबा (एकड़)
1.	मछली	नर्सरी तालाब में जलीय कीटों का प्रबंधन कर फ्राई के जीवन दर का आकलन	मछली बीज उत्पादन	04	06
2.	मछली	मछली नर्सरी तालाबों में फेयरीषृम्प का प्रबंधन	मछली बीज उत्पादन	04	05
3.	–	स्वसहायता समूह के कार्यो का आकलन	महिला सशक्तिकरण	10 SHGs	
4.		पारम्परिक तरीके की तुलना में कृषि विज्ञान केन्द्र – किसान मोबाईल संदेश द्वारा भेजे गए संदेश के प्रदर्शन एवं प्रभाव का आकलन	आई. सी. टी.	500	–
5.	धान	आठ कतारी पैडी ड्रम सीडर का आकलन	लघु कृषि यंत्र	04	04
6.	मूंग	मूंग में रासायनिक खरपतवार नियंत्रण का आकलन	खरपतवार नियंत्रण	04	04
7.	मूंग	मूंग की नई विकसित किस्म के उत्पादन का तुलानात्मक प्रदर्शन का आकलन	उत्पादन क्षमता	04	04
8.	उड़द	उड़द में बायोफर्टिलाइजर के प्रयोग का आकलन	समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन	04	04
9.	प्याज	प्याज की उन्नत किस्म का आकलन	फसल उत्पादन	05	02
10.	गेंदा	गेंदे की उन्नत किस्म का आकलन	फसल उत्पादन	05	02

कृषकों के खेतों में प्रथम पंक्ति प्रदर्शन (एफ.एल.डी.)

क्र	फसल	शीर्षक	कृषक संख्या	रकबा (हे.)
1.	मछली	भारतीय मेजर कार्प की अंगुलिकाओं का उत्पादन	04	06
2.	मशरूम	मशरूम उत्पादन पर प्रदर्शन	04	–
3.	धान	अंबिका पैडी विडर द्वारा महिला श्रम में कमी का प्रदर्शन	02	0.5
4.	धान	पशु चलित ब्यासी हल का प्रदर्शन	05	05
5.	उड़द	उन्नत किस्म आजाद उड़द-3 का प्रदर्शन	100	100
6.	मूंग	उन्नत किस्म एस.एम.एल. 668 का प्रदर्शन	100	100
7.	टमाटर	रेज्ड नर्सरी बैड में टमाटर पौध का प्रदर्शन	05	0.1
8.	अदरक	अदरक की उन्नत किस्म सुप्रभा का प्रदर्शन	05	02

प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.	विषय	संख्या	प्रशिक्षणार्थी
1.	गृह विज्ञान	2	53
2.	फसल उत्पादन	2	51
3.	उद्यानिकी	2	43
4.	मत्स्य उत्पादन	2	53
5.	मृदा एवं जल अभियांत्रिकी	1	37
6.	कीट विज्ञान	1	26
	कुल	10	263

पोषण वाटिका

डॉ. श्रीमती रेखा सिंह, एस.एम.अली हुमायूँ , डॉ. एस.के.वर्मा एवं डॉ. सौगात सासमल

परिवार के सभी लागो को आवश्यक फल सब्जी प्रतिदिन मिल सकें, इसके लिए प्रत्येक परिवार अपने गृह वाटिका को पोषण वाटिका का रूप दें। पोषण वाटिका में साग सब्जी के साथ फल वृक्ष भी लगायें जैसे :- केला, पपीता, आम, अमरूद, नींबु आदि। फल वृक्षों का चुनाव करते समय उनके शीघ्र फलन व छोटे आकार पर विशेष ध्यान देना चाहिये। ऐसे परिवार के लिए जिसमें 5-6 सदस्य हों, 200 वर्गमीटर की जगह पर्याप्त होती है।

पोषण वाटिका के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें।

1. वाटिका रेखांकन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखें कि फल वृक्ष उत्तर एवं पचिम की तरफ ही लगाया जाय।
2. मध्यम आकार वाले वृक्ष उत्तर की तरफ एवं छोटे आकार वाले वृक्ष पचिम की ओर लगायें।
3. वाटिका को चारों तरफ से घेर दें। घेरने के लिए 4-5 मीटर की दुरी पर खंभे लगाकर कँटेदार तार लगाया जा सकता है। बाड़ी के चारों तरफ करौंदे की सघन रोपाई कर जीवित बाड़ भी लगाई जा सकती है।
4. रास्ता एवं सिंचाई की नाली इस प्रकार बनायें कि पूरी वाटिका का कार्य आसानी से हो सकें। रास्ते एवं मेंड़ में अधिक भूमि बर्बाद न करें।
5. मेंड़ों पर भी जड़ वाली सब्जियाँ जैसे - मूली, गाजर, चुकुन्दर, दृालजम, आदि लगाई जा सकती है।
6. पेड़ों के नजदीक भी हम सब्जियाँ अथवा मसाले वाली फसलें जैसे :- लहसुन, हरी धनिया इत्यादि लगा सकतें है।
7. फलदार वृक्षों के निचे छाया में हल्दी, अदरक आदि लगायें।
8. जल स्त्रोत के आसपास अधिक पानी चाहने वाली सब्जियाँ एवँ फल जैसे :- कोचई, करमत्ता भाजी, केला आदि को लगाया जा सकता है।
9. पोषण वाटिका में एक मुनगा का पौध अवश्य लगायें। इसकें फल एवं कोमल पत्तियाँ सब्जी के रूप में विटामिन - ए का अच्छा स्त्रोत है।

आदर्श पोषण वाटिका के लिए उचित फसल - चक्र अपनाकर ही हम सालभर प्रत्येक क्यारी का पुरा उपयोग कर सकतें हैं, जिससे हमें नियमित रूप से वर्ष भर मसालें, सब्जियाँ एवं फल मिल सकें। फसलों का चुनाव व्यक्तिगत एवं मनपसंद के ऊपर निर्भर करता है।